ISSN:2583-8849



सीमा नवीन मेहता

राजसमंद, राजस्थान

सम्पूर्ण - सदैव

सागर खारा है सम्पूर्ण
मीठी नदियाँ मिलती रहेंगी
तब भी सदैव
रात अंधियारी है सम्पूर्ण
रोशनी देंगे चाँद-सितारे
तब भी सदैव

ईश्वर अदृश्य है सम्पूर्ण
पूजे जाते हैं विभिन्न रूपों में
तब भी सदैव
मानव में समझ है सम्पूर्ण
नादानी मूर्खता करता है
तब भी सदैव

सृष्टि रचनाओं से है सम्पूर्ण
नए-नए सृजन से बदलती है
तब भी सदैव
समता में धर्म है सम्पूर्ण
अधिक चाह में अपराध होते हैं
तब भी सदैव

प्रकृति में सब रंग है सम्पूर्ण
हर मौसम में बदलती है रंग
तब भी सदैव

भारत की पहचान

मान बनूं अभिमान बनूं
मैं भारत की पहचान बनूं

मीलों धरती खुला आसमां
पग - पग चलती लिए हौसला
राष्ट्र बुलंदी का अरमान बनूं
मैं भारत की पहचान बनूं
शौर्य - वीरता का इतिहास
विरासत देती नव उल्लास
संरक्षण का विज्ञान बनूं
मैं भारत की पहचान बनूं

कला संस्कृति परम्परा
विविधता में बसी एकता
स्मृतियों का हिंदुस्तान बनूं
मैं भारत की पहचान बनूं
संतों ऋषि मुनियों की तपस्या
जड़ी - बूटियों से होती चिकित्सा
मैं वैदिक अनुसंधान बनूं
मैं भारत की पहचान बनूं

युद्ध आक्रमण हुए कई, पर
टूटा बिखरा पर रहा अमर
अखंड भारत का सम्मान बनूं
मैं भारत की पहचान बनूं